लोक सभा

अतारांकित प्रश्नो संख्या 2097

3 अगस्तश्न2015 को उत्त7र के लिए

आईएनएसडीएजी द्वारा प्रशिक्षण

†2097. श्री चरणजीत सिंह रोड़ी:

क्या **इस्पात** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सरकार इस्पात विकास और संवर्धन संस्थान (आईएनएसडीएजी) के जरिए स्थानीय अभियांत्रिकों को प्रशिक्षण मुहैया करा रही है और इस्पात प्रयोग के लाभों और पुनर्बलन बारों को प्रयुक्त करते हुए उत्तम प्रक्रियाओं को प्रोत्साहित करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में इस्पात अभियान चला रही है;
(ख) यदि हां, तो क्या ऐसा प्रशिक्षण मात्र 6 राज्यों को कवर करते हुए 29 ग्रामीण स्थानों में ही सीमित केंद्रों में संचालित किया गया है;
(ग) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और कुछ ग्रामीण क्षेत्रों को चुनने हेतु क्या कारण हैं; और
(घ) सरकार द्वारा इस संबंध में गत तीन वर्षों में प्रत्येक वर्ष के दौरान खर्च की गई निधियों का ब्यौरा क्या है?

उत्त?र

इस्पातत और खान राज्य मंत्री (श्री विष्णु देव साय)

(क) से (ग) : इंस्टीरटूट फोर स्टींल डेवलपमेंट एंड ग्रोथ (आईएनएसडीएजी) विभिन्नत तरीकों से ग्रामीण क्षेत्रों में इस्पाओत की खपत को प्रोत्सारहित करता है। इस्ताटप प्रयोग के नए क्षेत्रों/ तरीकों का प्रचार-प्रसार करने के अलावा आईएनएसडीएजी ग्रामीण क्षेत्रों में विभिन्नह इस्पाइत आधारित निर्माणों की वर्तमान पद्धतियों में सुधार करने पर भी ध्यामन देता है। रिईनफोर्सड सीमेंट कंक्रीट (आरसीसी) निर्माण सर्वाधिक उपयोग की निर्माण पद्धति है, जिसको संपूर्ण देश के अधिकांश हिस्सों में अपनाया जा रहा है और जिसमें इस्पा त का प्रयोग रिईन्फोहर्समेंट बॉर के रूप में किया जाता है। इस प्रकार के निर्माण जहां अधिकांशत: अर्द्धकुशल अथवा कुशल मजदूर कार्य कर रहे हों, में गुणवत्ताै सुधार के लिए आईएनएसडीएजी ने राजमिस्त्रियों के लिए एक प्रशिक्षण मॉड्यूल विकसित किया है , जिसमें नवीनतम मानदंडों के अनुसार कुछ उत्कृशष्टे तरीकों के बारे में उन्हेंत जागरूक करने के लिए निम्नमलिखित शामिल हैं :-

- भूकंप रोधी डक्टा ईल डिटेलिंग
- स्थंल पर उचित निर्माण पद्धतियां
- कटिंग, बेडिंग, बाईन्डिंग, स्टो-रेज आदि के दौरान उचित सुरक्षा पद्धतियां
- स्थंल पर सामान्यर निकृष्टड पद्धतियों की पहचान और उनके उपचारात्मरक उपाय।
- रस्टिंग और कोरिजन संबंधी मुद्दे।

स्थारनीय इंजीनियर्स के लिए मुख्य मॉड्यूल में कुछ अतिरिक्त प्रशिक्षण सामग्रियों को जोड़ा जाता है और अधिकतर स्थाबनों में राजमिस्त्रियों/बॉर-बेन्डतर्स के लिए भी इन्हें अतिरिक्ता रूप में शामिल किया जाता है।

इस प्रकार के प्रशिक्षण के लिए प्रायोजक इस्पाात उत्पालदक स्थाडन के चयन का निर्णय करते हैं। अभी तक आईएनएसडीएजी ने पश्चिम बंगाल , असम , राजस्थापन महाराष्ट्र , बिहार और झारखंड राज्योंज में 1881 भागीदारों के लिए स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) , राष्ट्रीय इस्पाकत निगम लिमिटेड (आरआईएनएल) और टाटा स्टींल द्वारा प्रायोजित स्थाानों में 45 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए हैंजिनमें राजमिस्त्री, स्थाानीय शिल्पयकार और इंजीनियर शामिल हुए हैं।

(घ) : प्रशिक्षण की लागत को प्रायोजित इस्पाऔत उत्पालदकों द्वारा वहन किया जाता है।

*****